महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

द्वि-मासिक ई-पत्रिका

अंक - १२ माह- जनवरी-फरवरी वर्ष २०२३ विक्रमी संवत् २०७९

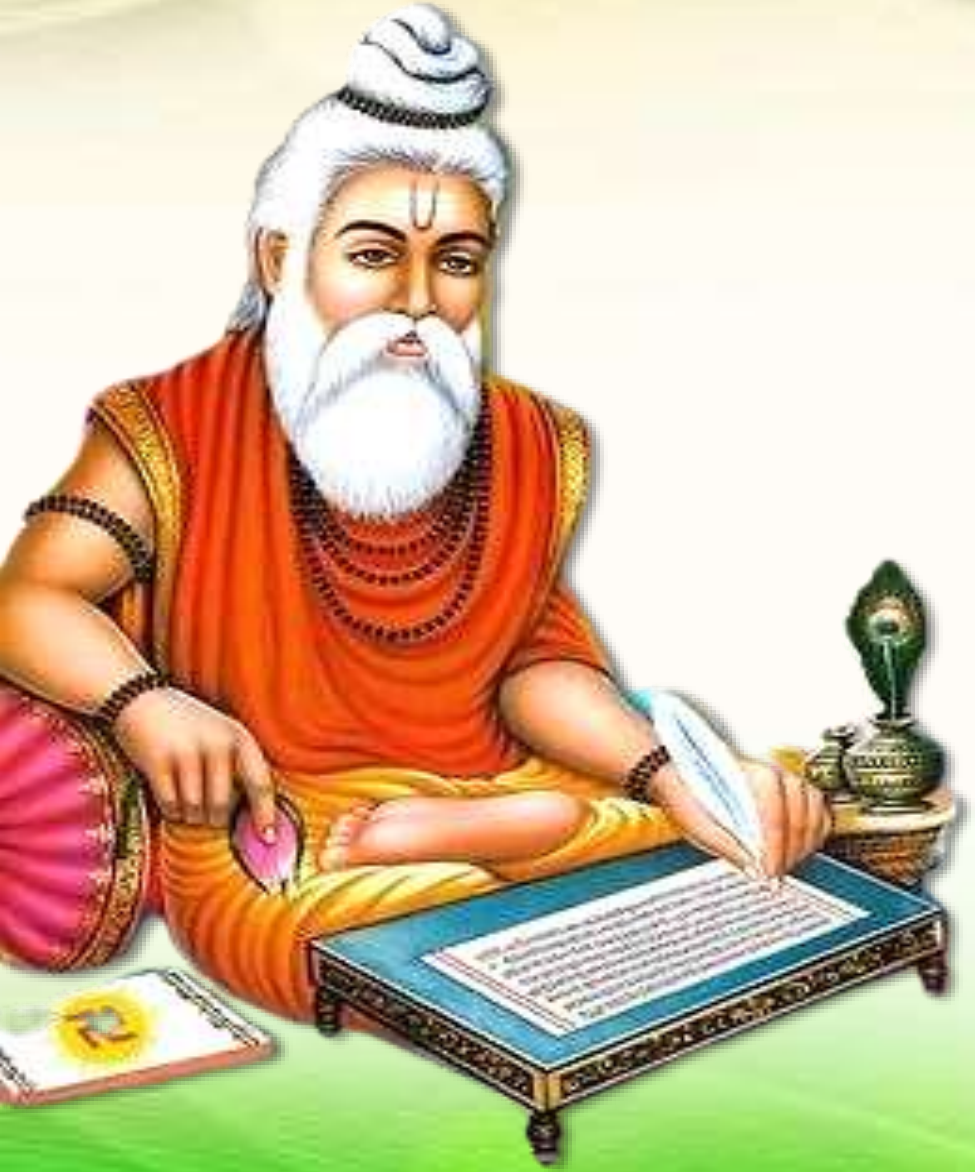

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचंद शर्मा
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. गोविन्द बल्लभ
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका

रजनी

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

सम्पादकीयम्

सम्पादक

भारतभूमिः केवलं भूमिः मात्रमेव नास्ति एषा एका सांस्कृतिक जीवन्त विचाराणां संचयोवर्तते। यत्र मानव जीवनस्य प्रतिपक्षमुद्धृत्य गहन मन्थनमभवत् । सांसारिक क्रियाणां सुव्यवस्थित संचालनमत्र भवति।

सर्वत्र कौटुम्बिकं भावस्य जागरणमत्र भवति। वेदेषु उक्तं वर्तते यत "अत्र विश्वंभवत्येक नीऽम्"।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' इत्यभिजानन्ति एव सर्वे। न केवलं भारते अपि समग्रेऽपिविश्वे कौटुम्बिक भाव स्यात् इति सदेच्छया लिखितं वर्तते भारतीय प्राचीन साहित्यम्।

आदिकाव्य रामायणे सर्वत्र कौटुम्बिकभावस्य जागृति दृश्यते। वयं जानीमः यत भारतीय संस्कृतौ 'अहं' इत्यस्य स्थानं नास्ति। 'अहं' इति भावस्य स्थानेऽत्र सर्वभूतहितेरताः इति भावनया जीवनं श्रेष्ठं भवति इति विचिन्त्य एव जीवनमापयन्ति भारतीयाः।

व्यष्टितः परमेष्ठि पर्यन्त समग्र सृष्टिः कुटुम्बमेकमेवास्ति। व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन कथंस्यात्, राष्ट्रीय जीवनं कथन्स्यात्, वैश्विक जीवनदृष्टिः कीदृशी भवितव्यं ? इति सर्वं ज्ञायते रामायण ग्रन्थ माध्यमेन। रामस्य जीवनमादर्श जीवनमस्तीत्यनुसृत्य तमनुसृत्य जनाः न केवलं स्वकीयमपितु-वैश्विक जीवन दृष्टिः कीदृशी स्यात् इत्यवगच्छन्ति। सर्वेषां प्राणिनां संरक्षणं, कथं भवेत् इति भावनाया कार्यं कुर्वन्तः आस्याभिः जीवनं यापनीयम्।

रामायणग्रन्थाधारितं गोस्वामी तुलसीदास विरचितं रामचरितमानसं प्रतिगृहे भासतेऽधुना । ग्रन्थेऽस्मिन् गोस्वामी तुलसीदासेन सरलतया समग्र भारतीय जीवन दृष्टिः स्थापिता वर्तते। पारिवारिक जीवनदृष्टिः, सामाजिकजीवनदृष्टि, राष्ट्रीय जीवनदृष्टिः, राजनीतिकदृष्टिः च कीदृशी भवितव्यमिति सर्वमस्त्यस्मिन् ग्रन्थे।

वर्तमान संदर्भे एतावत् अनेकेषु विषयेषु अनुसंधानस्यावश्यकता वर्तते। एतदर्थमेव महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालये वाल्मीकि शोध पीठस्य स्थापना अपि कृतं वर्तते। शोधपीठ माध्यमेन महर्षि वाल्मीकि विरचित रामायणे वर्णित भारतीय ज्ञान-परम्पराया: अनेके विषयाः वर्तमान सन्दर्भे समाजस्य समक्षे आगन्तुम् शक्यन्ते इत्याशासे। रामायणे वर्णितं भारतीय पारिवारिक जीवन रचना तथाच परस्परं त्याग भावना भारतीय समाजस्य कृते आदर्शं स्थापयति । भ्रातृधर्म, पातिव्रतधर्म, पितृधर्म, पुत्रधर्म, राजधर्मस्य च विशद व्याख्या कृतं वर्तते। राजनीतौ अधुनाऽपि रामराज्य परिकल्पना क्रियते। वयं सर्वे जानीमः यत् रामराज्यं धर्माधारितं राज्यं आसीत्। अतैव सर्वे स्वधर्मे निरतः आसन्। रामायण मानव जीवने स्वधर्म पालनस्य शिक्षां ददाति। रामराज्यविषये उक्तिः प्रचलिता वर्तते- दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य काहू नहि व्यापा॥ रामराज्ये प्राणिनः सर्वे सुखिनः आसन्।

विश्वविद्यालय के नूतन परिसर का उद्घाटन

दिनांक 16 जनवरी 2023 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के नूतन अस्थायी परिसर कुरुक्षेत्र रोड पर स्थित सरस्वती तकनीकि महाविद्यालय, टीक में परिसर का उद्घाटन हुआ। परिसर का उद्घाटन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज के निर्देशन में हवन पूजन करके किया गया। पूजन के पश्चात् एक सभा आयोजित की गई जिसके मुख्य अतिथि माता गेट स्थित मठ के महंत स्वामी रमन पुरी जी महाराज, अध्यक्ष माननीय कुलपति प्रोफेसर रमेश भारद्वाज रहे। माननीय कुलपति ने अपने सम्बोद्धन में कहा कि हमारा उद्देश्य यह है कि यह विश्वविद्यालय भारत का सर्वोत्कृष्ट संस्थान बने तथा देश विदेश में इसका झंडा लहराए। यह विश्वविद्यालय संस्कृत और संस्कृति की पहचान बने यही कामना है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने वक्तव्य देते हुए कहा कि संस्कृत और संस्कृति हमारे देश की पहचान है और इस पहचान को स्थाई रखने के लिए हरियाणा सरकार ने महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की है और हम उस पथ पर अग्रसर हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महंत जी ने कहा कि यद्यपि हरियाणा में बहुत सारे विश्वविद्यालय हैं परंतु यह विश्वविद्यालय एक अपना नया परचम लहराएगा।

कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. भाग सिंह बोदला ने कहा कि नूतन परिसर को लेने में विशिष्ट योगदान माननीय कुलपति का रहा तथा साथ ही अध्यापकों एवं कर्मचारियों ने इसको व्यवस्थित करने में विशिष्ट योगदान दिया उसके लिए हम सबका धन्यवाद करते हैं । कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के समस्त विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, कर्मचारीगण एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में मनाया गया गणतन्त्र दिवस

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के अस्थाई परिसर (कुरूक्षेत्र रोड़) टीक में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज द्वारा ध्वज फहराया गया जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी, प्राध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य पर सम्बोधित करते माननीय कुलपति जी ने कहा कि हमारा देश अनेक संघर्षों, बलिदानों के फलस्वरूप सन् 1947 में स्वतन्त्र हुआ तथा सन् 1950 में अपना गणतन्त्र बना। तब से हम निरन्तर इस दिवस को गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं। माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि हम अपने-अपने कर्त्तव्यों को भलीभांति करे तथा हृदय में सत्य को धारण करें तो निश्चित रूप से हमारा देश गुरुपद को प्राप्त करेगा। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि एक दिन यह विश्वविद्यालय समस्त देश का आदर्श विश्वविद्यालय बनेगा तथा इसमें शिक्षा ग्रहण करने वाले समस्त विद्यार्थी देश के प्रत्येक हिस्से में जाकर अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। जिससे भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति केवल देश में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में प्रसारित होगी।

ध्वज फहराने के बाद माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में तथा वेद विभागीय आचार्यों के नेतृत्व में बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर सरस्वती पूजन तथा विशाल हवन का आयोजन किया गया। हवन के उपरांत कुलपति जी ने मां सरस्वती के आशीर्वाद तथा कृपा की चर्चा करते हुए बताया कि वेदों से लेकर आज तक मां सरस्वती का पूजन हमेशा से भारत में किया गया है। हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि सरस्वती पूजन पूरे विश्वविद्यालय परिवार के साथ मना रहे हैं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के समस्त विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, कर्मचारीगण एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

कपिष्ठल कठ संहिता शोधकेन्द्र का उद्घाटन

दिनांक 17 फरवरी, 2023 को विश्वविद्यालय के नूतन परिसर टीक **"कपिष्ठल कठ संहिता शोधकेन्द्र"** का उद्घाटन एवं दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया जिसका विषय **'कपिष्ठल कठ संहिता में रूद्र पूजा का स्वरूप'** है। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चंद्र भारद्वाज रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए माननीय मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार तथा पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग **श्री भारत भूषण भारती** के करकमलों द्वारा **"कपिष्ठल कठ संहिता शोधकेन्द्र"** का उद्घाटन किया गया।

माननीय भारती जी ने कहा कि इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल शिक्षा प्राप्त करना नहीं अपितु हरियाणा की वैदिक संस्कृति की पुनः स्थापना करना तथा भारतीय जीवन मूल्यों की रक्षा करना है। कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रुप में उपस्थित माननीय संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान **प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल** ने कहा कि संस्कृत के कारण ही हमारी संस्कृति बची है तथा संस्कृत के कारण हमारी हस्ती भी बची है। एक दिन इस विश्वविद्यालय के छात्रों को समाज आदर्श के रूप में देखेगा। यहां का बच्चा ज्ञानवान तथा चरित्रवान बनेगा। कार्यक्रम का उद्घाटन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन तथा मंगलाचरण से किया गया इसमें मुख्य वक्ता के रूप में लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय से **प्रो. एस. एस. आरावमुदन्, आचार्य प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय, प्रो. रामराज उपाध्याय** उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

रुद्र यज्ञ का आयोजन

दिनांक 18 फरवरी, 2023 को शिवरात्रि के पावन पर्व पर विश्वविद्यालय ने अपने नूतन परिसर टीक में कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज की अध्यक्षता में रुद्र यज्ञ का आयोजन तथा निर्मित यज्ञ मण्डप में **'कृष्ण यजुर्वेदीय कपिष्ठल कठ संहिता'** के मन्त्रों द्वारा रुद्र महायज्ञ का आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें कैथल के सामान्य जनता ने भी भाग ग्रहण किया तथा रूद्र यज्ञ के स्वरूप को समझा। इस यज्ञ के महत्व के विषय में माननीय कुलपति ने कहा कि यह हरियाणा हमेशा से शैव संप्रदायी रहा है।

शिव की पूजा, शिव की आराधना हरियाणा में सदैव से होते आ रही है। इसीलिए हरियाणा के प्रत्येक गांव में आज भी कोई न कोई प्राचीन शिव मंदिर देखने को मिलता है। ज्ञात हो कि इसी सरस्वती नदी के तट पर वेदों का प्रणयन तथा विभाजन हुआ था और विशेष रूप से इसी कैथल में कृष्ण यजुर्वेदीय कपिष्ठल कठ संहिता का प्रणयन ऋषियों द्वारा भी हुआ था। अतः हमें अपने धरोहर को बचाना चाहिए उसका प्रचार प्रसार करना चाहिए और उसको जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। इसी उद्देश्य को लेकर आज विश्वविद्यालय ने इस शिवरात्रि के पावन पर्व पर इस महान रुद्र यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में जितने भी यजमान गण सम्मिलित हुए उन सब का निश्चित रूप से कल्याण होगा तथा इस विश्वविद्यालय के विकास को गति मिलेगी। इस अवसर पर संकाय के समस्त अध्यक्ष, विभाग के समस्त अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी, समस्त कर्मचारी, समस्त छात्र-छात्राओं ने उपस्थित होकर यज्ञ में आहुतियां दी तथा पुण्य के भागी बने।

महर्षि दयानंद सरस्वती जयन्ती समारोह

दिनांक 22-02-2023 को विश्वविद्यालय में महर्षि दयानंद सरस्वती का द्वितीय शताब्दी उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा की गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. भीम सिंह जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने मनुष्य को आत्मगौरव बनाया तथा वेद को घर घर तक पहुंचाया महर्षि दयानन्द की दृष्टि में वेद इस देश की आत्मा है। महापुरुष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना मार्ग ढूंढ लेता है।

मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित आर्य कन्या गुरुकुलम्, रुडकी, रोहतक की संस्थापिका पद्मश्री डॉ. सुकामा ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने प्राचीन विरासत पर गर्व करने का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम में पधारे अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज ने कहा कि पराधीनता काल में महर्षि दयानन्द ने पूरे देश में भ्रमण किया तथा लाहौर में प्रथम बार आर्ष गुरुकुल की स्थापना की। आर्य समाज आम व्यक्ति को भी ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण बनाता है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त विभागाध्यक्ष, आचार्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

जीन्द

इतिहास:- महाभारत काल की कई कथाएँ जीन्द से जुडी हैं। इस स्थान का उल्लेख वामन पुराण, नारद पुराण और पद्म पुराण में भी मिलता है। जीन्द में राजा गणपत सिंह को 1763 ई. में अफगानिस्तान के गवर्नर जॉइन खान ने राजा बनाया था। पुरातन भौगोलिक स्थिति में वर्तमान जीन्द जिला कुरुक्षेत्र का अभिन्न अंग रहा है।

परिचय:- जिला जीन्द 2702 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है। जिसकी कुल जनसंख्या लगभग 13,34,152, जनसंख्या घनत्व 440 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की साक्षरता दर 75% है। कुल साक्षर 8,32,758, खेती करने वालों की संख्या 1,72,682, अनुसूचित जाति 2,82,351 है। कुल शहरी जनसंख्या 3,05,583 व ग्रामीण जनसंख्या 10,28,569 है। शहर का लिंगानुपात 911/1000 है। जिले में 7 तहसीलों (जीन्द-70), (सफीदों-44), (जुलाना-30), (पिल्लूखेड़ा-27), (अलेवा-28), (उचाना-39), (नरवाना-69) में कुल 306 गाँव हैं। 5 नगर परिषद/पालिका (जीन्द, नरवाना, उचाना, जुलाना, सफीदों), 4 उपमण्डल (जीन्द, उचाना, नरवाना, सफीदों)।

जिले का उपनाम:- जीन्द को हरियाणा का दिल (हार्ट ऑफ हरियाणा), जयंतपुरी, जयंत देवी नगरी के उपनामों से भी जाना जाता है।

शिक्षण संस्थान:- जीन्द के साक्षरता दर को 75% तक पहुचानें में जिले के 16 विद्यालयों, 40 महाविद्यालयों व एक विश्वविद्यालय का विशेष योगदान हैं।

अर्थव्यवस्था:-

कृषि और खनिज:- यह क्षेत्र नहरों और नलकूपों द्वारा विस्तृत रुप से सिचिंत है। यहाँ गेहूँ व चावल प्रमुख फसलें के साथ-साथ बाजरा, तिलहन, चना और गन्ना शामिल हैं। जीन्द जिले की भूमि घग्गर और यमुना नदी के पानी में बहकर आई मिट्टी से बनी है, जिसे एल्युवियल या आयोलियन भूमि कहा जाता है। जिले में लगभग 272 हजार हेक्टेयर भूमि खेती योग्य है। जिले में खेती करने वालों की कुल संख्या 1,72,682 है।

उद्योग और व्यापार- यहाँ के उद्योगों में सूती वस्त्र, चीनी, स्टील की ट्यूब, मशीनों के पुर्जों के साथ-साथ कपास ओटने, इस्पात की री-रोलिंग और हथकरघे से बुनाई शामिल हैं। 1997 में हरियाणा डेयरी डेवलपमेंट कॉरपोरेशन द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किया गया। जींद जिला 18 एकड़ से अधिक भूमि में फैला है, जो प्रति दिन एक लाख लीटर दूध की प्रक्रिया करने की क्षमता वाले विटा दूध उत्पादों का उत्पादन करती है। जिले में 16 फरवरी 1985 को दस करोड़ इक्कतालीस लाख चौहत्तर हजार की लागत से चीनी मील को स्थापित किया गया था जो प्रतिदिन का 125 टन गन्ना क्रशिंग की क्षमता रखता है। इन उद्योगों से स्थानीय लोगों के साथ साथ अन्य राज्यों के लोगों को लगभग 37 वर्षों से रोजगार मिल रहा है।

यातायात और परिवहन:- दिल्ली-फिरोजपुर रेलमार्ग पर स्थित जींद, रेलमार्ग द्वारा पानीपत से व सड़क मार्ग द्वारा दिल्ली व हरियाणा के अन्य महत्वपूर्ण शहरों से जुड़ा है। जिले के प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग एन. एच. 352 और एन. एच. 152 हैं।

जीन्द जिले के प्रसिद्ध खिलाड़ी/अभिनेता- युजवेन्द्र चहल (क्रिकेटर), लक्खा लखविन्द्र सिंह (अभिनेता), सीता राम पांचाल (अभिनेता), कविता देवा (पहलवान), अंशु मलिक (पहलवान), सुमन कुण्डु (पहलवान)

तीर्थ एवं पर्यटन स्थल:-

जयंती देवी:- पौराणिक कथा के अनुसार पांडवों ने यहां जैंती देवी (विजय की देवी) के सम्मान में एक मंदिर बनवाया और कौरवों के खिलाफ अपनी लड़ाई में सफलता के लिए प्रार्थना की पेशकश की। कस्बा मंदिर के चारों ओर बड़ा हुआ। जैंतापुरी नाम का अर्थ जैंती देवी का निवास है जो वर्तमान में जींद के नाम से विख्यात है।

भूतेश्वर मंदिर/ रानी तालाब - भूतेश्वर मंदिर का यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह मंदिर भगवान् शिव को समर्पित है जिन्हें यहाँ भूतनाथ कहा जाता है। इसे जींद के शासक राजा रघुबीर सिंह ने बनवाया था। जींद रियासत के राजा रघुबीर सिंह ने श्रीहरि कैलाश मंदिर यानि भूतेश्वर मंदिर का निर्माण अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की तर्ज पर करवाया था। भूतनाथ, भूतों एवं आत्माओं के स्वामी हैं। यही कारण है कि उत्तर भारत में लगभग सभी शमशान भगवान् शिव की भव्य मूर्तियों से सजे हुए हैं। यह मंदिर गोहाना रोड पर स्थित है। कहा जाता है राजा ने यहां एक सुरंग भी बनवाया था, जो तालाब को महल से जोड़ती थी। इसको बनाने के पीछे कारण ये था कि रानी स्नान कर लोगों की नजरों में आए बिना सीधे महल में जा सके। महारानी अपने महल से इस तालाब में सुरंग के रास्ते से नहाने और पूजा करने आती थी। इसी कारण इसे बाद में रानी तालाब कहा जाने लगा। इसे शाही परिवार का पूल भी कहा जाता था। सुरंग के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। इस मंदिर में अन्य देवी देवताओं की भी कई मूर्तियां भी हैं। तालाब में भगवान शिव का मंदिर है जिसे कैलाश मंदिर और भूतेश्वर मंदिर भी कहा जाता है।

रामरा:- रामरा जीन्द से 8 कि. मी. दूर जीन्द-हाँसी रोड़ पर पश्चिम दिशा में स्थित है। इस स्थान को रामहरदा नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान से भगवान परशुराम की एक रोचक पौराणिक कथा जुड़ी है।

ऐसी मान्यता है कि क्षत्रियों का सर्वनाश कर उनके रक्त से पाँच कुण्डों को भरकर अपने पूर्वजों को प्रसन्न किया था। इस तीर्थ में पर्याप्त संख्या में लोग स्नान करने व भगवान परशुराम के पुराने मन्दिर में पूजा करने आते हैं।

पिंडारा:- पिंडारा शहर से 6.5 कि. मी. की दूरी पर जीन्द-गोहाना रोड़ पर स्थित है। प्रसिद्ध मान्यता है कि पाण्डवों ने महाभारत युद्ध में मारे गए अपने रिश्तेदारों को पिण्ड की पेशकश की थी। सोमवती अमावस्या को यहा विशाल मेले का आयोजन होता है।

हंसडैर:- तहसील नरवाना में स्थिज इस स्थान से अनेक किवंदतियां है। ऋषि कंदर्प ने कई वर्षों तक यहां तपस्या की थी। ऐसी मान्यता है कि भगवान ब्रह्म ने कंदर्प ऋषि के विवाह में भाग लिया था और वह हंस पर पहुचे थे। इस स्थान पर शिव मन्दिर और बिन्दूसार तीर्थ स्थित है।

नरवाना:- निर्वाण का अर्थ होता है मोक्ष। इसी से इस नगर का नाम नरवाना पडा। सूफी संत हजरत गैबी साहब रहस्यमय तरीके से धरती में समा गए थे। तद्परान्त यहां उनका मकबरा यहीं स्थित है जो चारों ओर से तालाबों से घिरा हुआ है।

राजपुरा भैंण:- राजपुरा भैंण जीन्द से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर है जो जीन्द-हाँसी मार्ग पर स्थित है। इस स्थान पर महाभारतकालीन गोविंद कुण्ड है जो महाभारत काल से अब तक अस्तित्व में है।

खाण्डा:- खाण्डा गाँव जीन्द से लगभग 23 कि.मी. की दूरी पर जीन्द-करनाल मुख्य मार्ग पर अलेवा गाँव के पास स्थित है। गाँव में अत्यधिक प्राचीन भगवान परशुराम की मन्दिर व तीर्थ स्थल है। स्थानीय लोगों के अनुसार भगवान परशुराम की माता रेणुका जामुनी गाँव के तीर्थ से प्रतिदिन जल लेने जाती थी। एक दिन चोरों ने माता रेणुका का स्वर्ण कलश चुरा लिया जिसके उपरान्त कलश तुरन्त मिट्टी का हो गया। वह कलश आज भी मन्दिर में स्थित है। प्रत्येक रविवार दूर-दूर श्रद्धालु यहाँ पूजा करने व स्नान करने आते हैं।

यक्षिणी तीर्थ:- यह जीन्द से 8 कि. मी. की दूरी पर दिखनीखेड़ा में स्थित है। यह माना जाता है कि जो व्यक्ति यहां स्नान कर लेता है और यक्षिणी को खुश कर देता है, उसके सभी पाप धुल जाते हैं।

पुष्कर:- पुष्कर का मंदिर पोंकर खेरी गाँव में स्थित है जो जींद के दक्षिण में बीस किमी दूर स्थित है। इसे जमदग्नि और रेणुका के पुत्र परशुराम ने बनवाया था, जिसका उल्लेख पौराणिक शास्त्रों में भी मिलता है।

धमतान साहिब:- तहसील नरवाना से लगभग 20 कि. मी. की दूरी पर नरवाना-टोहाना मार्ग पर स्थित प्रथम धार्मिक स्थल के रूप में जाना जाता है। ऐसा मान्यता है कि भगवान राम ने यहाँ अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया था। ऋषि वाल्मीकि जी का यहाँ पर आश्रम था। सिक्खों के नौंवे गुरू गुरू तेग बहादुर जी दिल्ली से आते हुए यहीं रुके थे। उनकी स्मृति में गुरुद्वारे जैसा किला बनवाया गया था। वहीं एक और गुरुद्वारे का पता भी मंजी साहिब के रूप में है।

सफीदों का किला:- 18वीं शताब्दी में जीन्द के महाराजा ने सफीदों में इस किले का निर्माण करवाया था। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार राजा परीक्षित के पुत्र और अर्जुन के पौत्र जनमेजय ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् इस स्थान पर 'सर्पयज्ञ' साँप बलि अनुष्ठान किया था।

जीन्द जिले के प्रसिद्ध मेले:- हटकेश्वर मेला, बिलसर मेला, जामनी का मेला, बाबा भोलूनाथ का मेला, सच्चा सौदा का मेला, धमतान साहिब का मेला।

सार्वजनिक सुविधाए:- जिले में कुल 35 अस्पताल, 2 गैर सरकारी संगठन, 4 बिजली घर व 19 बैंक हैं।

सुनीता
(आचार्य साहित्य)

सम्मन और मूसन का बलिदान

"जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ।।
अंतरि बाहरी मुखि दे गिरासु खिनु पोचारि ।।
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि"।।

गुरु रामदास

गुरु अर्जुन साहिब के वक्त दो व्यक्ति, पिता और पुत्र, अच्छे प्रेमी और शब्द (नाम) के अभ्यासी थे। पिता का नाम सम्मन और पुत्र का नाम मूसन था। वे मजदूरी करके अपना गुजारा करते थे। जब गुरु साहिब अमृतसर से लाहौर गये तो कोई सेवक कहे कि मेरे घर खाना खाओ, कोई कहे मेरे घर खाओ। यह देखकर गुरु साहिब ने कहा कि आप लिस्ट बना लो कि किस दिन किसके घर प्रसाद है।

यह बात सुनकर सम्मन और मूसन को भी शौक हुआ कि हम भी प्रसाद करें। उन्होंने सोचा कि खर्च को पूरा करने के लिए ओर अधिक मजदूरी कर लेंगे। सो उन्होंने भी लिस्ट में नाम लिखवा दिया। जब उनका प्रसाद करवाने का दिन नजदीक आया तो वे दोनों बीमार पड़ गये। जो रुपये कमाए हुए थे, दवा और खाने पीने में खर्च हो गए। अब प्रसाद कराने का दिन आ गया। लांगरियों का नियम था कि जो खाना उन्हें सुबह बनाना होता उसके लिए वे रात को ही बर्तन और अन्य सामान तैयार कर लेते थे। रात को ही लांगरी आये और उनसे बोले, "भाई जी ! सुबह आपके घर प्रसाद है तो हमें सामान दो।" अब उनके पास कोई चीज तैयार नहीं थी। आपस में सलाह करते हैं कि क्या करें। आखिर सलाह हुई कि चोरी करके इस जरूरत को पूरा किया जाये, बाद में इतना रुपया कमाकर वापस कर देंगे। सतगुरु की सेवा जरूर करनी है, अगर प्रसाद न किया तो गुरु साहिब क्या कहेंगे ? यह सोचकर उन्होंने लांगरियों से कहा कि अभी तो नहीं लेकिन कल सूरज निकलने से पहले ही सारा सामान दे देंगे। लांगरी चले गए।

उनकी गली में एक साहूकार की दुकान थी। रात को उसकी दुकान में सेंध लगायी। जो कुछ निकालना था सब निकाल लिया। सिर्फ नमक-मिर्च, मसाला वगैरा बाकी रह गया। पहले तो कहने लगे कि यह मसाला वगैरा रहने दें, फिर सोचा कि नहीं, दुबारा चल कर ले ही आयें। जब वे मिर्च-मसाला लेने गये तो साहूकार जाग गया। उस समय बाप तो दुकान से बाहर आ चुका था, बेटा सेंध में से निकल रहा था। जब सिर बाहर निकला तब साहूकार ने उठकर नीचे से टांगें पकड़ ली ताकि वह बाहर न निकल सके। बाप बाहर की ओर खींचने लगा और साहूकार अन्दर की ओर। अब न बाप छोड़े न साहूकार छोड़े। बड़ी खींचातानी हुई। आखिर बेटे ने बाप से कहा कि आप मेरा सिर काट लो। ऐसा न हो कि सुबह हो जाए और लोग कहें कि गुरु के शिष्य चोरी करते हैं, सो देर न करो, फौरन सिर काट लो।

सिर से ही पहचान होती है, अगर सिर न हुआ तो लाश किस तरह पहचानी जायेगी। अब बाप अपने ही बेटे का सिर किस तरह काटे ! उसने कहा, "मैं सिर नही काट सकता।" पुत्र ने कहा, "पिता जी ! गुरु के लिए मेरा सिर काट लो, क्योंकि मैं नही चाहता कि गुरु की बदनामी हो। इस तरह बदनामी भी नहीं होगी और सतगुरु की सेवा भी हो जायेगी।"

बाप ने थोड़ी देर विचार किया, फिर मारी तलवार और पुत्र का सिर काट लिया। धड़ नीचे जा गिरा। सम्मन ने पुत्र मूसन का सिर लाकर घर में रख दिया। अब बेटे की मौत, कलेजा कैसे ठहरे ? बड़ी मुश्किल से एक घण्टा गुजारा। उधर साहूकार ने कहा कि चोर को देखें तो सही कौन है ? जब देखा, उसका सिर नहीं है। उसको फिक्र हो गई। मन में सोचता है अगर इसको ठिकाने न लगाया तो सुबह पुलिस मेरे दरवाजे पर खड़ी होगी और मैं पकड़ा जाऊँगा। पुलिस कहेगी कि तूने सिर काटा है। हो न हो किसी के घर रख दें। उसने सम्मन को बुलाकर लाश उठवायी और कुछ रुपये भी दिए कि इसको ठिकाने लगा दे, मैं तुझे ओर भी ख़ुश कर दूँगा। सम्मन ने धड़ को वहाँ से उठा लिया और अपने घर लाकर धड़ और सिर दोनों जोड़कर रख दिये। उसका बहुत सा दुःख कम हो गया। सोचा कि मैं अब कहूँगा, जी मूसन बीमार है।

जब सुबह हुई, लांगरी आये। सम्मन ने उनको सारा सामान दे दिया। लांगरी लगे प्रसाद तैयार करने। जब प्रसाद तैयार हो गया तब गुरु साहिब आये। गुरु साहिब ने कहा, "सम्मन, मूसन को बुला"। सम्मन ने उनसे अर्ज़ की, "महाराज जी ! वह तो बीमार है"। गुरु साहिब ने फरमाया, "बीमार है तो क्या हुआ, उसे जरूर बुलाओ"। सम्मन बोला, "हुजूर ! वह नहीं आ सकता"। गुरु साहिब कहने लगे, "नहीं, उसको आना चाहिए"। सम्मन ने हाथ जोड़कर अर्ज की, "हुजूर ! मेरे कहने से वह नहीं आता"। गुरु साहिब बोले, "अच्छा तो फिर मैं बुलाऊँ ?" सम्मन ने कहा, "जी हाँ ! जरुर बुलाओ"। गुरु साहिब ने आवाज लगायी, "मूसन! उठकर बाहर आ जा, ऐसे वक्त तू कहाँ चला गया है" ? गुरु जी का इतना कहना था कि मूसन उठकर नौ-बर-नौ (ठीक-ठाक) होकर बाहर आ गया और मूसन और सम्मन दोनों गुरु साहिब के चरणों पर गिर पड़े।

जिन्होंने अपना तन-मन गुरु को सौंप दिया, उन्होंने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया वे ही गुरु की खुशियाँ लेते हैं।

श्वेता
पी-एच. डी.
म. वा. सं. वि., (कैथल)

प्रश्नमञ्जरी

(१) 'अर्थशास्त्रम्' के प्रणेता है-
(क) कौटिल्य (ख) भागुरायण (ग) भास्कराचार्य (घ) राक्षस।
(२) वात्स्यायन का कामसूत्र कितने अधिकरणों में विभक्त है ?
(क) 5 (ख) 7 (ग) 9 (घ) 14 ।
(३) वात्स्यायन भाष्य किस पर आधारित हैं ?
(क) कामसूत्र (ख) न्यायशास्त्र (ग) अर्थशास्त्र (घ) चाणक्यसूत्र।
(४) 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक के लेखक कौन है ?
(क) महाकवि भास (ख) कालिदास (ग) भवभूति (घ) हर्ष
(४) वासुदेव दीक्षित की बालमनोरमा टीका किस पर है ?
(क) मध्यकौमुदी (ख) सिद्धान्त कौमुदी
(ग) लघु कौमुदी (घ) प्रक्रिया कौमुदी
(६) 'संस्कृत वाङ्मय कोश' के लेखक कौन है ?
(क) श्रीधराचार्य (ख) श्री वामनदेव
(ग) श्रीधर भास्कर वर्णेकर (घ) डॉ. चन्द्रधर वर्णेकर
(७) विश्वामित्र ने किसे अपना मित्र माना-
(क) शुनः पुच्छ (ख) हरिश्चन्द्र (ग) शुनःशेप (घ) सुदास
(८) विश्वामित्र का मूल नाम था-
(क) विश्वरथ (ख) विश्ववादी (ग) शक्ति (घ) कौशिक
(९) 'भारतीय संस्कृति कोश' के लेखक हैं -
(क) आचार्य सोमदेव (ख) वासुदेवानन्द
(ग) हरदेव बाहरी (घ) स्वामी विवेकानन्द
(१०) 'शिवराज विजयम्' के लेखक है -
(क) अश्वघोष (ख) अम्बिकादत्त व्यास (ग) वामनदेव (घ) भवभूति

(एकाङ्कशङ्कस्य उत्तराणि) **(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)**

(1) सिद्धान्त कौमुदी (2) मम्मट (3) भोजराज (4) जैन (5) नारायण पण्डित (6) याज्ञवल्क्य (7) राजशेखर (8) जय (9) 18 हजार (10) 5 हजार

सुभाषितानि

चक्षुः पूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतं वदेद् वाणीं मनः पूतं समाचरे

आँख से भलीभाँति देखकर पैर रखना चाहिए (चलना चाहिए) कपड़े से छानकर जल पीना चाहिए, सच्चाई से पूर्ण वाणी बोलनी चाहिए और मन जिसे पवित्र मानता हो (अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित) वैसा आचरण करना चाहिए।

चाणक्य नीति

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।
धर्मोपदेशं विख्यातं कार्याऽकार्यं शुभाऽशुभम्॥

चाणक्य नीति के इस श्लोक का अर्थ है कि जो व्यक्ति शास्त्रों के नियमों का निरंतर अभ्यास करके शिक्षा प्राप्त करता है उसे सही, गलत और शुभ कार्यों का ज्ञान हो जाता है. ऐसे व्यक्ति के पास सर्वोत्तम ज्ञान होता है। यानि ऐसे लोग जीवन में अपार सफलता प्राप्त करते हैं।

पाप का बाप

एक पण्डितजी काशी से विद्याध्ययन करके अपने गांव वापिस आए। शादी की पत्नी घर आई। एक दिन पत्नी ने पण्डितजी से पूछा– 'आपने काशी में विद्याध्ययन किया है, आप बड़े विद्वान हैं। यह बताइए कि पाप का बाप (मूल) कौन है ?'

पण्डितजी अपनी पोथी-पत्रे पटलते रहे, किन्तु पत्नी के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके। उन्हें बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई कि हमने इतनी विद्या ग्रहण की पर आज पत्नी के सामने लज्जित होना पड़ा। वे पुनः काशी विद्याध्ययन के लिए चल दिए। मार्ग में वे एक घर के बाहर विश्राम के लिए रुक गये। वह घर एक वेश्या का था। वेश्या ने पण्डितजी से पूछा– 'कहां जा रहे हैं, महाराज ?' पण्डितजी ने वेश्या को बताया कि 'मेरी स्त्री ने पूछा है कि पाप का बाप कौन है ? इसी प्रश्न का उत्तर खोजने काशी जा रहा हूँ।' वेश्या ने कहा– 'आप वहां क्यों जाते हैं, इस प्रश्न का उत्तर तो मैं आपको यहीं बता सकती हूँ।' पण्डितजी प्रसन्न हो गए कि यहीं काम बन गया, पत्नी के प्रश्न का उत्तर इस वेश्या के पास है। अब उन्हें दूर नहीं जाना पड़ेगा। वेश्या ने पण्डितजी को सौ रुपये भेंट देते हुए कहा–'महाराज ! कल अमावस्या के दिन आप मेरे घर भोजन के लिए आना, मैं आपके प्रश्न का उत्तर दे दूंगी।' सौ रुपये का नोट उठाते हुए पण्डितजी ने कहा–'क्या हर्ज है, कर लेंगे भोजन।' यह कहकर वेश्या को अमावस्या के दिन आने की कहकर पण्डितजी चले गए।

अमावस्या के दिन वेश्या ने रसोई बनाने का सब सामान इकट्ठा किया। पण्डितजी आए और वेश्या रसोई बनाने लगी तो वेश्या ने कहा– पक्की रसोई तो आप सबके हाथ की पाते (खाते) ही हो, कच्ची रसोई किसी के हाथ की बनी नहीं खाते। मैं कच्ची रसोई बना देती हूँ, आप पा (खा) लेना।' ऐसा कहकर वेश्या ने सौ रुपये का एक नोट पण्डितजी की तरफ बढ़ा दिया। सौ का नोट देखकर पण्डितजी की आंखों में चमक आ गई। उन्होंने सोचा–पक्की रसोई तो हम दूसरों के हाथ की खा ही लेते हैं, तो यहां कच्ची रसोई खाने में कोई हर्ज नहीं है। वेश्या ने कच्ची रसोई बनाकर पण्डितजी को खाना परोस दिया। तभी वेश्या ने एक और सौ का नोट पण्डितजी के आगे रख दिया और हाथ जोड़कर विनती करते हुए बोली– 'महाराज ! जब आप मेरे हाथ की बनी रसोई पा रहे हैं, तो मैं अपने हाथ से आपको ग्रास दे दूँ तो आपको कोई ऐतराज तो नहीं है, क्योंकि हाथ तो वही हैं जिन्होंने रसोई बनाई है।' पण्डितजी की आंखों के सामने सौ का करारा नोट नाच रहा था। वे बोले– 'सही कहा आपने, हाथ तो वही हैं।' पण्डितजी वेश्या के हाथ से भोजन का ग्रास लेने को तैयार हो गये।

पण्डितजी ने वेश्या के हाथ से ग्रास लेने के लिए जैसे ही मुंह खोला, वेश्या ने एक करारा थप्पड़ पण्डितजी के गाल पर जड़ दिया और बोली– 'खबरदार ! जो मेरे घर का अन्न खाया। मैं आपका धर्मभ्रष्ट नहीं करना चाहती। अभी तक आपको ज्ञान नहीं हुआ। यह सब नाटक तो मैंने आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए किया था। जैसे-जैसे मैं आपको सौ रुपये का नोट देती गयी, आप लोभ में पड़ते गए और पाप करने के लिए तैयार होते गए।

इस कहानी से सिद्ध होता है कि पाप का बाप लोभ, तृष्णा ही है। मनुष्य अधिक धन-संग्रह के लोभ में पाप की कमाई करने से भी नहीं चूकता। इसीलिए शास्त्रों में अधिक धनसंग्रह को विष या मद कहा गया है। कहा गया है कि –

कनक कनक ते सो गुना मादकता अधिकाय।
या खाए बोहराय जग में या पाए बोहराए॥

अर्थात्- पहले कनक का अर्थ धतूरा है जिसे खाने से बुद्धि भ्रमित होती है, किन्तु दूसरे कनक का अर्थ सोना (धन) है जिसे देखने से ही बुद्धि भ्रमित हो जाती है।

कामना या तृष्णा का कोई अंत नहीं है। तृष्णा कभी जीर्ण (बूढ़ी) नहीं होती, हम ही जीर्ण हो जाते हैं। पाप से बचने के लिए इन चार बातों का त्याग बतलाया गया है– "जो प्राप्त नहीं है उसकी कामना", "जो प्राप्त है उसकी ममता","निर्वाह की चिन्ता और "मैं ऐसा हूँ यानी अंहकार" इन चार बातों का त्याग कर मनुष्य पाप से दूर रहकर सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकता है। आशक्ति और संसार का आकर्षण आपके मोक्ष में पूर्ण बाधक है..!!

दीपक कौशिक
लिपिक (व्याकरण विभाग)